नेहा कुमारी शाह
हिंदी विभाग
गुवाहाटी विश्वविद्यालय

बंदिश - एक मानसिक पीड़ा

बंदिश एक सामाजिक पीड़ा है। समाज को यदि हम बंदिश कहकर संबोधित करें तो अतिशयोक्ति न होगी। बंदिश, जकरना, बांधना इत्यादि अलग-अलग संज्ञा है जो आज के आधुनिक युग में भी एक मानसिक पीड़ा के रूप में हमारे सामने उभर कर आ रही है। एक ऐसी पीड़ा जो ना दिखती है ना किसी दूसरे को महसूस होती है बस जिस पर यह बंदिशे लगाई जाती है उसको वही भोक्ता है। यह एक ऐसी दीमक की तरह हो गई है जो धीरे-धीरे काठ रूपी जीवन को खा जाती है उसकी पूरी तरह नष्ट कर देती है अंदर से खोखली कर देती है। बंदिश हम केवल मनुष्य पर नहीं संसार के हर वस्तु पर लगाते हैं किंतु मनुष्य पर बंदिश लगाना एक मानसिक पीड़ा की तरह साबित हो रही है। बंदिश का सशक्त रूप हम अक्सर स्त्रियों के विषय में देखते हैं। जब वह अपने इच्छा अनुसार कोई कार्य करना चाहते हैं तब किस प्रकार समाज व परिवार उसे नीचे की तरफ खींचना चाहता है और अपने अनुसार उसे संचालित करता है।

समाज और परिवार ने एक स्त्री के जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया है वह उसके व्यक्तित्व में झलकता है। जब भी स्त्री उड़ाना चाहे अपने चुने रास्ते पर चलना चाह तब तक बंदिशे लगाई गई विडंबना या है कि आज 21वीं साड़ी में भी स्त्रियों को ऐसी मानसिक पीड़ा से जूझना पड़ रहा है।

21वीं सदी में आधुनिक युग के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में बहुत सी रुढ़ियों से, बंधनों से मुक्ति पाई गई है। बंदिश कोई प्रत्यक्ष दिखने वाली वस्तु नहीं वह केवल रुदन होते हैं। बंदिश विचारों की होती है, जज्बातों की होती है, मान्यताओं की होती है, फैसलों की होती है। जब किसी व्यक्ति में स्वभाव और विचारों का मेल ना हो तो समझ लेना कि वह प्रतिबंधों में जी रहा है। व्यक्ति सोचता कुछ और है किंतु करता है वह जो समाज और परिवार कहता है चाहे वह उसके विचारों से मेल खाते हो या नहीं। और जब स्वभाव और विचार में मिल ना हो तो एक व्यक्ति अपने ही अंतर्मन में बिखरकर, टूट कर खंडित हो जाता है जो प्रत्यक्ष नहीं दिखता। और जीवन की विडंबना यह है कि उसे खंडित भाग को कोई देख नहीं पता और यही है बंदिश विचारों की एक मानसिक पीड़ा।

बंदिश ना सकारात्मक भावना हो सकती है ना सकारात्मक कार्य। बंदिशे व्यक्ति को विकसित होने से, उसको विकास करने से रोकता है। उसे स्वतंत्रता नहीं देता-स्वतंत्रता व्यक्ति विशेष के विचारों का समाज में प्रतिपादित करना उसके विचारों को महत्व देना और समाज के विकास के लिए उभरते और विकासशील व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। और जो व्यक्ति स्वतंत्रता नहीं मिलती उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है जो समाज के लिए एक अदृश्य पतन की घटना साबित होती है।